अध्याय 21

भारतीय कला एवं संस्कृति तथा विरासत

इस अध्याय में आप सीखेंगे किः

- भारतीय कला एवं संस्कृति की प्रमुख शैलियाँ, उनके अभिलक्षण और विशेषताएँ क्या थीं। इसके साथ-साथ उससे सम्बन्धित व्यक्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।
- भारत की कला, साहित्य, लोक नृत्य के अभिलक्षण, उसके क्षेत्र, स्थान और विशेषताओं के सन्दर्भ में विशेष जानकारी क्या है।
- भारतीय चित्र कला, मूर्ति कला से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यात्मक, सूचनात्मक ज्ञान, परम्परागत ज्ञान को अद्यतन कैसे किया जाए।
- भारत के प्रमुख मेला, महोत्सव, आयोजनों के बारे में तथ्यात्मक एवं सूचनात्मक जानकारी क्या है।

नृत्य

नृत्य	स्थान	अभिलक्षण/तथ्य/विशेषताएँ	व्यक्तित्व
(A) राष्ट्रीय नृत्य (i) भरतनाट्यम घराना— • तंजौर • कांचीपुरम • पण्डनलूर अन्य नामों से प्रसिद्ध— • दाशीअट्टम • अग्नि नृत्य	तमिलनाडु	**अभिलक्षण**—19वीं शताब्दी के पूर्व में, तंजावुर के चार नृत्य शिक्षकों (चिनियाह, पोनियाह, वादिवेलू तथा शिवानंदम) ने इस नृत्य शैली के प्रमुख अभिलक्षणों को परिभाषित किया है— • **अलारिप्पू**—यह प्रदर्शन का आरम्भिक भाग है। जिसमें आधारभूत नृत्य मुद्राएं सम्मिलित होती है तथा इसे लयबद्ध शब्दांशों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। इसका उद्देश्य ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करना है। • **जातिस्वरम**—यह विभिन्न मुद्राओं तथा चालों सहित नृत्य की शुद्ध विधा है। • **शब्दम्**—यह गीत में अभिनय को शामिल करने वाला नाटकीय नृत्य है। सामान्यतः इसे ईश्वर की प्रशंसा में प्रयुक्त किया जाता है। • **वर्णम**—इसमें चेहरे पर भाव, रस एवं ताल तीनों का सम्यक प्रदर्शन होता है। • **पद्म**—यह अभिनय के ऊपर कलाकार की सिद्धहस्तता को प्रदर्शित करता है।	• **पुनर्जीवित करने को श्रेय**—ई. कृष्ण अय्यर • **वैश्विक पहचान दिलाने का श्रेय**—रूक्मिणी देवी अरून्डेल • **अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व** यामिनी कृष्णमूर्ति पद्मा सब्रुह्मण्यम मृणालिनी साराभाई टी बाला सरस्वती सोनल मान सिंह पद्मा सुब्रमण्यम लीला सैमसन

(Continued)

नृत्य	स्थान	अभिलक्षण/तथ्य/विशेषताएँ	व्यक्तित्व
 रूक्मणी देवी की नवीन भारतनाट्यम हेतु पोशाक		• **जावला**—यह अपेक्षाकृत तीव्र गति को साथ प्रस्तुत लघु प्रेम गीत काव्य होता है। • **थिल्लन**—यह नृत्य की समापन अवस्था है तथा इसमें विशुद्ध नृत्य के साथ उल्लासपूर्ण गति तथा जटिल लयबद्ध स्पंदन को शामिल किया जाता है। **तथ्य**— • नृत्य विद्या का सर्वाधिक प्राचीन रूप है। • भरतनाट्यम का नाम भरत मुनि तथा नाट्यम शब्द से मिलकर बना है। • तमिल में नाट्यम शब्द का अर्थ नृत्य होता है। **विशेषता**— • इस नृत्य की प्रस्तुति में घुटने अधिकांशत: मुड़े होते हैं तथा शरीर का भार दोनों पैरों पर समान रूप से वितरित किया जाता है। • नृत्य की मुख्य मुद्राओं में से एक है। 'कटक मुख हस्त' जिसमें तीन उंगलियों को जोड़कर 'ॐ' का प्रतीक निर्मित किया जाता है।	
(ii) कत्थक **घराना**— • लखनऊ • जयपुर • रामगढ़ • बनारस कत्थक मुद्रा	उत्तर प्रदेश	**अभिलक्षण**—कथक नृत्य विधा को जटिल पद-चालनों, उछलना तथा चक्करों के प्रयोग से पहचाना जाता है, इस नृत्य शैली के प्रमुख अभिलक्षण है— • **आनन्द**—यह परिचयात्यक प्रस्तुति है जिसके माध्यम से नृर्तक मंच पर प्रवेश करता है। • **ठाट**—इसमें हल्की किन्तु अलग-अलग प्रकार की हरकते होती है। • **तोड़े तथा टुकड़े**—यह तीव्र लय के लघु अंश होते है। • **जुगलबन्दी**—यह कथक प्रस्तुति का मुख्य आकर्षक है जिसमें तबला वादक तथा नर्तक के बीच प्रतिस्पर्द्धात्मक खेल होता है। • **पढंत**—यह एक विशिष्ट रूपक होता है जिसमें नर्तक जटिल बोल का पाठ कर नृत्य के द्वारा उनका प्रदर्शन करता है। • **तराना**—यह भरतनाट्यम नृत्य शैली के थिल्लन के समान ही होता है जो समापन से पूर्व लयात्मक संचालनों से मिलकर बनता है। • **क्रमालय**—यह नृत्य के समापन का अंश होता है जिसमें जटिल तथा तीव्र पद-चालन का समावेश होता है। **तथ्य**— • ब्रजभूमि की रासलीला से उत्पन्न कथक उ.प्र. की एक परम्परागत नृत्य विधा है।	• **कथक की शास्त्रीय शैली को 20वीं शताब्दी में पुनर्जीवित करने का श्रेय**—लेडी लीला सोखे • **अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व** बिरजू महाराज लच्छू महाराज शम्भू महाराज सितारा देवी दमयंती जोशी जय किशन हनुमान प्रसाद हरी प्रसाद (देवपरी) वृन्दादीन

(Continued)

नृत्य	स्थान	अभिलक्षण/तथ्य/विशेषताएँ	व्यक्तित्व
		• कथक का नाम 'कथिका' अर्थात् कथावचक शब्द से लिया गया है जो भाव-भंगिमाओं तथा संगीत के साथ महाकाव्यों से ली गयी कविताओं की प्रस्तुति किया करते थे। **विशेषता—** • कथक की जुगलबंदी प्रायः ध्रुपद संगीत के साथ होती है। • मुगल काल में तराना, दुमरी तथा गजल भी इसमें शामिल किये गये थे।	

(iii) कुचिपुड़ी
 	
कुचिपुड़ी मुद्रा
	आन्ध्रप्रदेश	**अभिलक्षण—**कुचिपुड़ी नृत्य की अधिकांश प्रस्तुतियाँ भागवत पुराण की कहानियों पर आधारित है, किन्तु उनका केन्द्रीय भाव पंथ निरपेक्ष रहा है। इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता है। इस नृत्य शैली के प्रमुख अभिलक्षण है—
		• **दारू—**प्रत्येक मुख्य चरित्र दारू के प्रस्तुतीकरण के साथ स्वयं को मंच पर प्रविष्ठ करता है, जो प्रत्येक चरित्र के उद्‌घाटन के उद्‌देश्य से विशिष्ट रूप से निर्देशित नृत्य तथा गीत की लघु रचना होती है। कुचिपुड़ी में समूह प्रदर्शन के अलावा कुछ लोकप्रिय एकल प्रदर्शन भी है जिनके अभिलक्षण है—
		  • **मंडूक शब्दम—**एक मेढ़क की कहानी प्रस्तुत की जाती है।
		  • **तरंगम—**इसमें नर्तक एक पीतल की तश्तरी के किनारे पांव रखकर तथा अपने सर पर जल पात्र या दियों के एक सेट को संतुलित रखते हुए प्रस्तुत करता है।
		  • **जल चित्र नृत्यम—** नर्तक या नर्तकी नृत्य करते हुए अपने पैर के अंगूठों से सतह (जमीन) पर चित्र बनाते हैं।
		तथ्य—
		• कुचिपुड़ी नृत्य विधा का नाम आंध्र के एक गांव कुस्सेल्वापुरी या कुचेलापुरम् से व्युत्पन्न हुआ है।
		• इस नृत्य विधा पर पुरुष ब्राह्मणों का एकाधिकार था तथा इसकी प्रस्तुतियाँ मंदिरों में दी जाती थी।
		विशेषता—
		• इस नृत्य विधा की प्रस्तुति करते समय नर्तक स्वयं ही गायक की भूमिका को भी संयोजित कर सकता है इसलिए यह एक नृत्य-नाटक प्रस्तुति बन जाती है।
		• इसमें आराध्य देव शिव है इसलिए इस विधा में लास्य व तांडव दोनों ही शामिल है।
		• कुचिपुड़ी प्रस्तुति में कर्नाटक संगीत की जुगलबंदी की जाती है।
		• वायलिन तथा मृदंगम् इसके प्रमुख वाद्य यंत्र होते हैं।
			• **पुनर्जीवित करने को श्रेय—** बालासरस्वती, रागिनी देवी
			• **अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व**
			राधा रेड्डी
			राजा रेड्डी
			यामिनी कृष्णमूर्ति
			इंद्राणी रहमान
			शोभा नामड़
			स्वपन रेड्डी

(Continued)

नृत्य	स्थान	अभिलक्षण/तथ्य/विशेषताएँ	व्यक्तित्व
(iv) कथकली गुरू कुंचुकुरूप (1881-1970)	केरल	**अभिलक्षण**—इस नृत्य का प्रमुख अभिलक्षण आंखों तथा भृकुटियों की गति के माध्यम से रसों का निरूपण करना है साथ ही इस नृत्य की विधा में रंग मंचीय सामग्री का न्यूनतम प्रयोग होता है क्योंकि विभिन्न चरित्रों के लिए मुकुट और चेहरे के विस्तृत श्रृंगार का प्रयोग किया जाता है। अलग-अलग रंगों का अपना प्रथक महत्व है जैसे— • **हरा रंग**—यह रंग कुलीनता, दिव्यता तथा सद्गुण को दर्शाता है। • **लाल रंग**—नाक के बगल में लाल धब्बे प्रभुत्व दर्शाते हैं। • **काला रंग**—यह रंग बुराई तथा दुष्टता को दर्शाने के लिए किया जाता है। तथ्य— • केरल के मंदिरों में सामंतों के संरक्षण में नृत्य व नाट्य के दो रूप प्रचलित थे एक था रामानट्टम जिसमें रामायण की कहानी कही जाती थी तथा दूसरा था कृष्णाट्टम जिसमें महाभारत की कहानी कही जाती थी। ये दोनों लोक नाट्य परम्परायें कथकली के उद्भव का स्त्रोत बनी जिसका नाम 'कथा' अर्थात कहानी और 'कली' यानी नाटक से लिया गया है। विशेषता— • अधिकांश कथकली की प्रस्तुति अच्छाई तथा बुराई के बीच शाश्वत संघर्ष का शानदार प्रदर्शन होती है। • इस नृत्य विधा की विषय-वस्तु महाकाव्यों तथा पुराणों से ली गयी कहानियों पर आधारित होती है इसलिए इसे 'पूर्व का गाथा गीत' भी कहा जाता है। • इस नृत्य की प्रस्तुति प्रायः मुक्ताकाश रंगमंचों पर या मंदिरों परिसरों में मोटी चटाइयाँ बिछा कर दी जाती है। • प्रकाश के लिए एक पीतल का लैम्प का प्रयोग किया जाता है। • कथकली आकाश या ईश्वरत्व का प्रतीक है। • इसके चरित्र कभी बोलते नहीं है केवल उनके हाथों के हावभाव, चेहरे की अभिव्यक्ति, भंवों की गति, नेत्रों का संचालन, गाल नाक और ठोड़ी की अभिव्यक्ति नर्तक द्वारा विभिन्न भावनाओं को प्रकट करती है। • इसके नर्तक उभरे हुए परिधानों, दुपट्टों, आभूषणों व मुकुट से सजे होते हैं।	• **पुनरूत्थान करने को श्रेय—** राजा मुकुंद के सरक्षण में प्रसिद्ध मलयाली कवि वी.एन. मेनन द्वारा • **अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व** गुरू कुंजु कुरूप गोपी नाथ रीता गांगुली कृष्ण नायर
(v) ओडिसी	ओडिसा	**अभिलक्षण**—भावों की अभिव्यक्त करने के लिए मुद्राओं तथा विन्यासों के प्रयोग में यह भरतनाट्यम से मिलती-जुलती है। इस नृत्य विद्या के महत्वपूर्ण अभिलक्षण है— • **त्रिभंग मुद्रा**—यह मुद्रा शरीर के तीन स्थानों वक्रित कर बनती है तथा ओडिसी नृत्य विद्या में शामिल है।	• **अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाने का श्रेय**—चार्ल्स फैब्री तथा इंद्राणी रहमान

(Continued)

नृत्य	स्थान	अभिलक्षण/तथ्य/विशेषताएँ	व्यक्तित्व
 ओडिसी मुद्रा		• **लालित्य, विषया सक्ति तथा सौन्दर्य** का निरूपण ओडिसी नृत्य की अनोखी विद्या है, जिसमें नर्तकिया अपने शरीर से जटिल ज्यामितीय आकृतियों का निर्माण करती है, इसलिये इसे चलायमान शिल्पाकृत्ति के रूप में भी जाना जाता है। • **मंगलाचरण**—यह नृत्य का आरम्भ का अंश है। • **बटु नृत्य**—इसमें सुन्दर भाव भंगिमाओं, मंजीरा, वीणा आदि का प्रयोग होता है और यह नृत्य पुष्प की भाँति धीरे-धीरे परिवर्तित होता है। यह अभिनय प्रधान होता है, किन्तु जब इसका समापन होता है तो नृत्य अति तीव्र हो जाता है। • **थारिझाम**—इसमें समापन से पूर्व पुनः विशुद्ध नृत्य का समावेश होता है। तथ्य— • नृत्य की इस विद्या को यह नाम नाट्य शास्त्रा में वर्णित 'ओड्रा नृत्य से प्राप्त हुआ है। • पुरी के जगन्नाथ धाम में रहने वाली देव दासियों द्वारा ईश्वर की अराधना के समय यह नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। विशेषता— • इस नृत्य विद्या में लड़कों को लड़कियों के रूप में सजाकर मंदिर में नृत्य करने की परम्परा को गोतिपुआ कहा जाता है। • इस नृत्य को बृहदेश्वर मंदिर के शिला लेखों में दर्शाया गया है साथ ही कोणार्क के सूर्य मंदिर के केन्द्रीय कक्ष में इसका उल्लेख मिलता है।	• **अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व** गुरू पंकज चरण दास, गुरू केलु चरण महापात्रा, सोनल मानसिंह, शैरौन लोवेन (अमेरिका)
(vi) मोहिनी अट्टम मोहिनी अट्टम मुद्रा	केरल	**अभिलक्षण**—इस नृत्य के प्रमुख अभिलक्षणों में शामिल है: • इस नृत्य विद्या में लालित्य, चारूत्य और कथकली के ओज का मिश्रण मिलता है। • मोहिनी अट्टम में सामान्यतः विष्णु के नारी सुलभ नृत्य की कहानी कही जाती है। तथ्य— • मोहिनीअट्टम शब्द का अर्थ है, मोहिनी अर्थात् 'सुन्दर नारी' और अट्टम अर्थात् 'नृत्य' यानी सुन्दर नारी का नृत्य। • यह एक एकल नृत्य है, जिसे वर्तमान में केरल राज्य के त्रावणकोर के शासकों के संरक्षण में प्रसिद्धि मिली।	• **पुनरूद्धार का श्रेय**—वी.एन. मेनन (मलयाली कवि) कल्याणी अम्मा • **अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व** सुनंदा नायर माधुरी अम्मा जयप्रभा मेनन

(Continued)

नृत्य	स्थान	अभिलक्षण/तथ्य/विशेषताएँ	व्यक्तित्व
		विशेषता— • मोहिनी अट्टम की प्रस्तुति में नृत्य के लास्य पक्ष की प्रधानता रहने के कारण इसे महिला नर्तकों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। • इस नृत्य विधा में पोषक का विशिष्ट महत्व होता है। इसमें मुख्य रूप से श्वेत तथा श्वेताभ रंगों का प्रयोग किया जाता है। • इस नृत्य की प्रस्तुति से वायु तत्व को निरूपित किया जाता है।	
(vii) मणिपुरी **मणिपुरी 'राधा कृष्ण' नृत्य प्रस्तुतीकरण मुद्रा**	मणिपुरी	**अभिलक्षण**—इस नृत्य विद्या के प्रमुख अभिलक्षण हैं— • **रास लीला**—मणिपुरी नृत्य प्रस्तुति का एक पुनरावृत्ति केन्द्रीय भाव है। • **नागाभन्दा मुद्रा**—इस मुद्रा में शरीर को 8 की आकृति में बने वक्रों के माध्यम से संयोजित किया जाता है। यह मणिपुरी नृत्य विद्या में एक महत्वपूर्ण मुद्रा है। • **तांडव तथा लास्य**—इस नृत्य विधा में तांडव तथा लास्य दोनों है परन्तु अधिक बल लास्य को दिया जाता है। **तथ्य—** • मणिपुर नृत्य विधा का पौराणिक प्रमाण मणिपुर की घाटियों में स्थानीय गन्धर्वो के साथ शिव पार्वती के नृत्य में बताया जाता है। • वैष्णववाद के अभ्युदय के साथ इस नृत्य विधा को ख्याति प्राप्त हुई है। **विशेषता—** • यह नृत्य विधा विषयाशक्ति नहीं बल्कि भक्ति पर बल देने के कारण अनोखा है। • मणिपुरी नृत्य में मुद्राओं का सीमित प्रयोग होता है। • इस नृत्य में मुख्यत: हाथ तथा घुटने के स्थानों की मंद तथा लालित्यपूर्ण गति पर बल दिया जाता है। • ढोल-पुंग-ऐसी प्रस्तुति का एक जटिल तत्व है। करताल, ढोल इत्यादि की सहायता से इसके साथ संगीत दिया जाता है। • जयदेव तथा चंडीदास की रचनाओं का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है।	• **ख्याति दिलाने का श्रेय—** रविन्द्र नाथ टैगोर ने मणिपुरी को शान्ति निकेतन में प्रवेश देकर ख्याति दिलायी। • **अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व** नयना स्वर्णा रंजना-झावेरी बहनें दर्शाना गुरू बिपिन सिंह

भारत के लोक नृत्य

लोक नृत्य	प्रचलन का स्थान	नृत्य केन्द्र बिन्दु	विशेषता
छऊ वर्ष 2010 में यूनेस्को ने मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में 'छऊ' का नाम शामिल किया है।	**झारखंड में**—सरायकेला छऊ **ओडिसा में**—मयूरभंज छऊ **प. बंगाल में**—पुरूलिया छऊ छाऊ नृत्य	पौराणिक कहानियां का वर्णन। ***नोट***—कुछ कथाओं में स्वभाविक केन्द्रीय भावों जैसे—सर्व नृत्य या मयूर नृत्य का प्रयोग होता है।	• छऊ शब्द छाया से निकला है, जिसका अर्थ है परछाई। • यह मखौटा नृत्य का एक प्रकार है, जिसमें पौराणिक कहानियों का वर्णन करने के लिए शक्तिशाली युद्ध संबंधी संचालनों का प्रयोग किया जाता है। ***नोट***—मयूरभंज छऊ (ओडिसा) के कलाकार मुखौटा नहीं पहनते।
गरबा	गुजरात का लोकप्रिय लोक नृत्य 	छिद्र युक्त मिट्टी के बर्तन जिसमें द्वीप प्रज्ज्वलित कर, के चारो ओर महिलायें नृत्य करती हैं।	• नवरात्र के अवसर पर किया जाता है। • गरबा का वास्तव अर्थ है 'गर्भदीप' • महिलायें छिद्र युक्त मिट्टी के बर्तन पर द्वीप जलाकर उसके चारों ओर लयबद्ध तालियों के स्वर पर चक्राकार गति से नृत्य करती हैं।
डांडिया रास	 डांडिया	दुर्गा तथा महिषासुर के बीच छद्‌म युद्ध दर्शाया जाता है।	• यह एक ऊर्जा युक्त तथा रोचक नृत्य है, जिसमें पालिश की हुई छड़ियों या डांडिया का प्रयोग किया जाता है।
तरंग मेल	गोवा का लोक नृत्य है	क्षेत्र की युवा ऊर्जा का उत्सव मनाया जाता है।	• इसे दशहरा तथा होली के दौरान प्रस्तुत किया जाता है। • इन्द्रधनुषी पोशाकों के साथ बहुरंगी झंडों तथा कागज के रिबनों के प्रयोग से एक दर्शनीय नजारे में परिवर्तित कर दिया जाता है।

(Continued)

लोक नृत्य	प्रचलन का स्थान	नृत्य केन्द्र बिन्दु	विशेषता
घूमर या गंगोर	राजस्थान में भील जनजाति की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत परम्परागत लोक नृत्य	महिलाओं का चक्कर खा-खा कर घूमना होता है।	• इन नृत्य में जब महिलायें चक्कर खा-खा कर घूमती हैं तो उनके उड़ते हुए घाघरे की बहुरंगी थरथराहटें शानदार दिखती हैं।
कालबेलिया ***नोट***—वर्ष 2010 में यूनेस्को ने मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में कालबेलिया लोकगीत तथा नृत्य को सूचीबद्ध किया है।	राजस्थान के कालबेलिया (सपेरा) समुदाय की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।	पोशाके तथा नृत्य की चाल सर्प के समान होती है।	• महिलायें सपेरों द्वारा बजाया जाने वाला वाद्य यंत्र 'बीन' की धुन पर भावमय नृत्य करती है।
चारबा	हिमाचल प्रदेश का एक लोकप्रिय लोकनृत्य है।		• यह नृत्य दशहरा के उत्सवों के दौरान प्रस्तुत किया जाता है।
पटा कुनीथा	मैसूर क्षेत्र की लोकप्रिय नृत्य विधा है।	धार्मिक नृत्य जो सभी धर्मो के लोगों के बीच लोकप्रिय है।	• पुरूषों द्वारा पटा नाम से प्रसिद्ध रंगीन रिबनों से सुसज्जित होकर लम्बे बांस के खम्भों का प्रयोग कर प्रस्तुत करते है। रंगों का बाहुल्य इसे दर्शनीय तमाशा बना देता है।
भूत आराधने	कर्नाटक की लोकप्रिय नृत्य विधा है	शैतान की पूजा	• प्रदर्शन से पूर्व शैतानों की प्रतीक प्रतिमाओं को एक आधार पर रख नर्तक उन्मत्त होकर नृत्य करते है, जैसे उस पर किसी आत्मा ने कब्जा जमा रखा हो।
कोल्काली परिचकाली	दक्षिणी केरल तथा लक्ष्यद्वीप के इलाकों की लोकप्रिय युद्ध कला नृत्य है।	युद्ध श्रृंखला का अभिनय	• नर्तक लकड़ी के बने नकली शस्त्रों का प्रयोग करते हुए युद्ध श्रृंखलाओं का अभिनय करते हैं। यह अभिनय धीमी गति से आरम्भ होता है किन्तु धीरे-धीरे गति बढ़ती जाती है और अंत में उन्माद पूर्ण हो जाता है।

(Continued)

लोक नृत्य	प्रचलन का स्थान	नृत्य केन्द्र बिन्दु	विशेषता
भांगड़ा/ गिद्दा	पंजाब का ऊर्जायुक्त लोक नृत्य है।	उत्साह का संचार करता है।	• उत्तेजित करने वाले ढोल की थापों के साथ किया जाने वाला यह नृत्य उत्सवों के दौरान लोक प्रिय है। *नोट*—भांगड़ा पुरुष करते हैं जबकि गिद्दा महिलायें करती है। अर्थात् भांगड़ा का नारी संस्करण गिद्दा है।
रासलीला	उत्तरप्रदेश के ब्रज क्षेत्र का लोकप्रिय लोक नृत्य है।	राधाकृष्ण के किशोर प्रेम पर केन्द्रित।	
दादरा	उ.प्र. में लोकप्रिय नृत्य का अर्द्ध शास्त्रीय रूप है।		• यह लखनऊ क्षेत्र के दरबारी नर्तकों में अत्याधिक लोकप्रिय है।
झूमर	झारखण्ड व उड़ीसा के जनजातियों द्वारा प्रस्तुत।	फसल कटाई नृत्य है।	• जनानी झूमर जिसे महिलाएं प्रस्तुत करती है तथा मर्दाना झूमर जिसे पुरूष प्रस्तुत करते है। यह नृत्य बहुत से मेलों तथा त्योहारों का मुख्य आकर्षण होता है।
बिहू	असम का प्रसिद्ध नृत्य है।	घूम-घूम कर तथा उल्लास को व्यक्त करता है।	• पुरुषों तथा नारियों दोनों के समूह द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इस नृत्य के सफ़ल प्रदर्शन में समूह निर्माण, तीव्र हस्त-चालन तथा फ़ुर्तीले कदमों की भूमिका होती है।
बिरहा	ग्रामीण बिहार एवं पूर्वी उ.प्र. में मनोरंजन का एक लोकप्रिय माध्यम है।	उन महिलाओं की व्यथा का वर्णन होता है जिनके साथी घर से दूर होते हैं।	• यह नृत्य पूरी तरह से पुरूषों द्वारा ही प्रस्तुत किया जाता है और महिलाओं का पात्र भी पुरुष ही निभाते हैं।
जाट-जटिन	बिहार के उत्तरी भाग विशेषकर मिथिलांचल में लोकप्रिय है।	विवाहित दंपत्तियों के बीच के कोमल प्रेम तथा मीठी नोक-झोंक पर आधारित।	

भारतीय चित्रकला

चित्रकला	महत्वपूर्ण तथ्य	भारत के उदाहरण
(1) **भित्ति चित्रकला** 	• ठोस संरचना की दीवारों पर की गयी रचना भित्त चित्रकला कहलाती है जो प्राचीन काल से ही भारत के अस्तित्व है। • द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व और दसवीं शताब्दी ईस्वीं के बीच विकसित हुई है। • इन चित्रों के सबसे आम विषय हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म है। • अधिकांश भित्ति चित्रकलाएं या तो प्राकृतिक गुफाओं में या चट्टानों को काटकर बनाये गये कक्षों में है। • इसके अतिरिक्त इस प्रकार के चित्र किसी लौकिक भवन का अलंकरण करने के लिए भी बनाये जाते थे। • भित्ति चित्र अपने विशाल आकार के कारण अद्वितीय है।	भारत में भित्ति चित्रकला के प्रमुख उदाहरण निम्नवत् है— **(1) अजन्ता गुफा की चित्रकला** • ये चित्र उस काल (मौर्य काल) की शैलियों, वेशभूषा और आभूषणों के साथ-साथ मानवीय मूल्यों और सामाजिक ताने-बाने का निर्देशन करते है। • इन चित्रों में भावनाओं को हाथ के संकेतो से व्यक्त किया गया है। • इन चित्रों की अनूठी विशेषता प्रत्येक महिला आकृति का अद्वितीय केश विन्यास (Different Hair Styles) है। • पशु-पक्षियों को भी भावनाओं के साथ दिखाया गया है। • मनुष्यों और पशुओं की सुन्दर आकृतियों से गुफाओं की दीवारों को सजाया गया है। **अन्य—** • वनस्पतिक और खनिज रंगों का प्रयोग। • आकृतियों की रूपरेखा, भूरे, काले या लाल रंग की धाराओं के साथ लाल गेरू रंग की है। ***नोट***—अजन्ता गुफा भारतीय उप महाद्वीप के सबसे पुराने बचे हुए भित्त चित्रों में से एक है। **एतिहसिक तथ्य—** • इन गुफाओं को मौर्य साम्राज्य के अधीन पूरा किया गया था। • इनमें 29 गुफाओं का समूह शामिल है। **(2) एलोरा गुफा की चित्रकला** • **विस्तार**—कैलाश मंदिर तक सीमित 5 गुफाओं में पाये जाते है। • **निर्माण कार्य**—2 चरणों में। • **चित्र**—प्रारम्भिक चित्र बादलों से होकर गुजरते आकाशीय पक्षी गरूड़ पर अपनी पत्नी लक्ष्मी के साथ बैठे विष्णु का है जबकि बाद के चित्र गुजराती शैली में बने उत्तरकालीन चित्र शैद साधुओं के जुलूल का चित्रण करते है। ***नोट***—एलोरा गुफा के चित्र सभी तीनों धर्मों हिन्दु, बौद्ध तथा जैन से सम्बन्धित है। **(3) बाघ गुफा की चित्रला** • **विस्तार**—मध्य प्रदेश में स्थित बाघ की गुफाओं तक। • **समरूपता**—अपने डिज़ाइन, निष्पादन और सजावट के सन्दर्भ में वास्तविक अंजता गुफाओं के काफी निकट है। • **अन्तर**—एलोरा और बाघ गुफाओं के चित्रों में मुख्य अन्तर यह है कि बाघ गुफाओं की आकृतियाँ अधिक मजबूती से चित्रित है, इनकी रूपरेखा अधिक दृढ़ है और अपेक्षाकृत अधिक सांसारिक और मानवीय है।

(Continued)

चित्रकला	महत्वपूर्ण तथ्य	भारत के उदाहरण
		• **विशेषता**—रंग महल के रूप में ज्ञात गुफा संख्या 4 से दीवारों पर बिल्कुल अजन्ता की भांति बौद्ध और जातक कथाओं का निरूपण करने वाले सुन्दर भित्त चित्र है। इस प्रकार प्रकृति में से अधिक धर्मनिरपेक्ष है। **(4) आम्रमलाई गुफा की चित्रकला** • **विस्तार**—तमिलनाडु के वेल्लोर जिले से स्थित। • **रूपातरण**—प्राकृतिक गुफाओं का 8वीं सदी में जैन मंदिर के रूप में रूपांतर किया गया था। • **विशेषता**—इन गुफाओं की दीवारों और छतों बने सुन्दर रंगीन चित्र 'अष्टाथिक पालक' (8 कोनों के देवता) की कहानियों और जैन धर्म को दर्शाते है। **(5) सित्तनवासल गुफा की चित्रकला** • **विस्तार**—तमिलनाडु के पुदुस्कोट्टई शहर के 16 किमी उत्तर पश्चिम में स्थित चट्टानों को काटकर बनायी गयी। **विशेषता**— • ये प्रसिद्ध गुफाओं जैन मंदिरों की चित्रकला के लिए जानी जाती है। • दीवारों पर ही नहीं बल्कि छतों और स्तम्भों पर भी चित्र विद्यमान है। • चित्रों के लिए उपयोग किये जाने वाले माध्यम शाकीय और खनिज रंजक है और इन्हें पहले गीले चूने के प्लास्टर की सतह पर रंग डालकर बनाया गया था। • हरा, पीला, नारंगी, नीला, काला और सफेद रंगों का प्रयोग किया गया है। **ऐतिहासिक तथ्य**— कुछ विद्वान विश्वास करते हैं कि ये गुफाएँ पल्लव काल की है, जब राजा महेन्द्र वर्मन प्रथम ने मंदिर की खुदाई करवायी, जबकि इसमें अन्य लक्ष्य तब आये जब पाण्ड्य शासक ने 9वीं शताब्दी में इन मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया। **समरूपता**— इन भित्ति चित्रों की समरूपता बाघ और अजंता की गुफाओं की चित्रकला से है। (यह समानता की बात बतायी गयी है और यह सही है।) **(6) रावण छाया चट्टानी आश्रय** • **विस्तार**—ओडिशा के क्योंझर जिले में स्थित चट्टानों आश्रम स्थल पर बने में प्राचीन फ्रेस्को चित्र 'आधी खुली छतरी के आकार' में है। • **प्रमुख चित्र**—सर्वाधिक उल्लेखनीय चित्र 7वीं सदी के एक शाही जुलूस का है और 11वीं सदी से सम्बन्धित चोल काल की चित्रकला के अवशेष भी महत्वपूर्ण है।

(Continued)

चित्रकला	महत्वपूर्ण तथ्य	भारत के उदाहरण
		• **अन्य**—इन आश्रय स्थलों का प्रयोग शाही आखेट भवनों के रूप में किया जाता था। (7) **लेपाक्षी चित्रकला** • **विस्तार**—आन्ध्र प्रदेश के अन्तपुर जिले में स्थित इन भित्ति चित्रों का चित्रण लेपाक्षी मंदिर की दीवारों पर किया गया था। **विशेषता**— • मंदिर पर बने होने के बावजूद भी ये चित्र धर्म निरपेक्ष है। • चित्रों में प्राथमिक रंगों विशेषकर नीले रंग का पूर्ण अभाव है। • रूपों, आकृतियों और इनकी वेशभूषा के दर्शाने के लिए काले रंग का प्रयोग किया गया है। **अन्य**—गुणवत्ता के स्वर में चित्रकला में पतन दिखायी देता है।
(2) लघु चित्रकला	• लघु चित्र छोटो और विस्तृत विवरण देने वाले होते है। • चित्र 25 वर्ग इंच से बड़े नहीं होते। • अधिकांश भारतीय लघुचित्रों में मानव आकृतियाँ, एक प्रष्ठीय रूपरेखा के साथ दिखायी देता है। • मानव आकृति सामान्यत: बाहर की ओर उभरी आंखे नुकीली नाक और पतली कमर के रूप में चित्रित है। • राजस्वामी लघु चित्रों में पात्रों की त्वचा का रंग भूरा है जबकि मुगल लघु चित्रों के पात्रों की त्वचा सामान्यत: उजली है। • भगवान कृष्ण की भांति दिव्य प्राणियों की त्वचा का रंग नीला है। • महिला आकृतियों के लंबे बाल है और उनकी आंखों व बालों का रंग काला है। • पुरूष सामान्यत: पारंपरिक कपड़े पहने हुए और सिर पर पगड़ी है।	भारत में लघु चित्रकला के प्रमुख उदाहरण निम्नवत् है— **(i) प्रारम्भिक लघु चित्र** • **विकास**—विशाल भित्ति चित्रों की प्रतिक्रिया स्वरूप विकसित, लघु चित्रकला का विकास 9वीं और 11वीं शताब्दी के बीच हुआ। इस प्रकार की चित्रकला के लिए पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों को श्रेय दिया जा सकता है। **विशेषता**— • सूक्ष्म विवरणों वाले छोटे चित्रों को लघु चित्र कहा जाता है। • इन चित्रों को सामान्यत: कागज, ताड़ के पत्तों और कपड़ों सहित नष्ट प्राय सामग्रियों पर, पुस्तकों या एलबमों के लिए चित्रित किया जाता है। **(ii) कला की पालशैली** • **विकास**—750 ई. के दौरान हुआ था। **विशेषता**— • ये चित्र पांडुलिपियों के अंग के रूप में मिलते हैं। • इन्हें प्राय: ताड़ पत्रा या चर्मपत्र पर बनाया गया है। • अधिकांशत: बौद्ध भिक्षु इनका उपयोग करते थे और वे केवल केले या नारियल के पेड़ के पत्तों को ही उपयोग करते थे। • इन चित्रों की विशेषता लहरदार रेखाएं और शान्त प्रष्ठभूमि है। • चित्रों में ज्यादातर अकेली आकृतियां है और बहुत ही कम समूह चित्र पाये जाते है। **अन्य**— • बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने वाले कुछ शासकों और बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के समर्थकों ने इस चित्रकला का संरक्षण किया। **(iii) कला की अपभ्रंश शैली**— • **विकास**—11वीं सदी से लेकर 15वीं सदी के दौरान पश्चिमी भारत में।

(Continued)

चित्रकला	महत्वपूर्ण तथ्य	भारत के उदाहरण
		विशेषताएं— • इन चित्रों का सबसे सामान्य विषय जैन धर्म था और आगे चलकर वैष्णव पंथ ने भी इन्हें विनियोजित किया। वे इन चित्रों में गीत-गोविन्द और धर्मनिरपेक्ष प्रेम की अवधारणा लाए जिस पर अन्यथा जैनशासत्रों का प्रभुत्व था। • जैन चरण में, चित्र ताड़ पर बनाये जाते थे, परन्तु वैष्णव पंथों ने इन्हें कागज पर बनाया। • इन चित्रों को सचित्र पुस्तकों के लिए चित्र के रूप में बनाया जाता था। • ये चित्र निचले आयाम वाले भित्तचित्र ही थे। • इन चित्रों में प्रयुक्त रंगों का प्रतीकात्मक अर्थ था और इनमें सामान्यत: लाल, पीले और गेरू रंग का उपयोग किया गया था। बाद के चरणों में इनमें उजले और सोने के रंगों का उपयोग किया जाने लगा। • इन चित्रों में दर्शाई गयी मानव आकृतियों की विशेषता मछली के आकार की बाहर उभरी हुई आँखें, तीखी नाक और दोहरी ठोड़ी थी। • महिला मूर्तियों के विस्तृत कूल्हे और स्तन है। • चित्रों में पशुओ और पक्षियों की आकृतियों को खिलौने के रूप में निरूपित किया गया है। • इस शैली की चित्र कला का प्रसिद्ध उदाहरण 15वीं सदी के कल्प सूत्र और कलाकच्या कथा का है। **(iv) संक्रमणता काल के लघुचित्र—** **विकास—** • भारतीय उप-महाद्वीप में मुस्लमानों का आगमन परिवर्तन का अग्रदूत था और वे 14वीं सदी में सांस्कृतिक पुनर्जागरण को लाए। कोई यह नहीं कह सकता है कि इस्लामी शैलियां ही छा गई क्योंकि चित्रकला की पारंपरिक शैलियां पश्चिमी भारतीय राजदरबारों में बची रही थी। **विशेषता—** • इस अवधि का सबसे अच्छा उदाहरण वीरभद्र मंदिर के चित्र हैं, जिसकी छते 11 मीटर लंबी है, जिसके किनारे अमूर्त रूपांकनों से चित्रित है। इसे लेपाक्षी चित्रकला के नाम से जाना गया। • इस चित्रकला की विशेषता स्वाभाविक रंगो की उपस्थिति और प्राथमिक रंगों विशेष रूप से नीले रंग का अभाव है। • रंग समतल ढंग से लगाये जाते थे और पोशाक और मानव रूपांकन काले रंग से अंकित किये जाते थे।

(Continued)

चित्रकला	महत्वपूर्ण तथ्य	भारत के उदाहरण
		(v) दिल्ली सल्तनत में लघु चित्रकला: **विकास—** • इन चित्रों ने भारतीय पारंपरिक तत्वों के साथ अपने मूल के फारसी तत्वों को एक साथ लाने का प्रयास किया। **विशेषता—** • इन चित्रों में सचित्र पांडुलिपियों को वरीयता दी गई और इस अवधि के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक मांडू पर शासन करने वाले नासिर शाह के शासनकाल के दौरान का निमतनामा है। इस पांडुलिपि में स्वदेशी और फारसी शैलियों का संश्लेषण दिखायी देता है। • इसके अतिरिक्त लोदी खुलादर नामक एक और शैली भी इस अवधि में प्रचलित थी। जिसका अनुसरण दिल्ली और जौनपुर के बीच कई सल्तनत प्रधान क्षेत्रों ने किया। **(vi) मुगल काल की लघु चित्रकला—** **विकास**—यह मुगल काल में बनाए गए चित्रों की विशिष्ट शैली थी। **विशेषताएं—** • इन चित्रों में ईश्वर के चित्रण के स्थान पर शासक का महिमामंडन करने और उसका जीवन दर्शाने पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा था। • ये चित्र आखेट के दृश्यों, ऐतिहासिक घटनाओं और दरबार से संबंधित अन्य चित्रों पर केन्द्रित थे। • मुगल चित्रकला महान वंश की संपन्नता तथा फारसी प्राकृतिक शैली का मिश्रण है। • चमकीले रंगों के प्रयोग के कारण इन चित्रों को अद्वितीय माना जाता है। • धार्मिक चित्रों को छोड़कर मुगल अपने विविध विषयों के लिए जाने जाते हैं भले ही उन्होंने केवल लघु चित्र बनवाएं, फिर भी उन चित्रों को विश्व के सबसे अनूठे चित्रों में माना जाता है। • मुगल काल भारतीय चित्रकारों के लिए अग्रदृश्यांक की तकनीक लाये। इस तकनीक में चित्र इस प्रकार से चित्रित किये जाते थे, कि ये वास्तविकता की तुलना में अधिक निकटवर्ती और छोटी दिखाई देती थी।

मुगल कालीन चित्रकला

मुगलकालीन चित्रकार	चित्रकला में उनका योगदान
बाबर	• बाबर ने युद्धों की श्रृंखला लड़ने के बाद 'मुगल वंश' की स्थापना की थी। • बाबर को चित्रकला का शुभारंभ करने के लिए अधिक समय नहीं मिला परन्तु उसे फारसी कलाकार बिहजाद को संरक्षण देने वाला कहा जाता है। • बिहजाद ने मुगल वंश वृक्ष के कुछ चित्र बनाये थे।

(Continued)

मुगलकालीन चित्रकार	चित्रकला में उनका योगदान
हुमायूँ	• हुमायूँ की रूचि चित्रकला और सुन्दर स्मारक बनवाने की थी, परन्तु उसकी चित्रशाला में तब व्यवधान आया जब उसे शेरशाह सूरी के हाथों सिंहासन खोना पड़ा और फारस में निर्वासित रहना पड़ा। • हुमायूँ जब फारस में शाह अब्बास के राजदरबार में था तो उसने अब्दुस समद और मीर सईद अली तबरीजी नामक दो मुख्य चित्रकारों की सेवाएं प्राप्त की थी, जब उसने पुनः भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना की तो ये दोनों चित्राकार उसके साथ भारत आये थे। • इन दोनों कलाकारों को मुगल चित्रकला में फारसी प्रभाव लाने के लिए उत्तरदायी माना जाता है और उन्होंने कई सफल सचित्र एलबमों की रचना की।
अकबर	• अकबर को चित्रकला और अपने दस्तावेजों के सुलेखन के लिए समर्पित एक पूरे विभाग की स्थापना करने का श्रेय दिया जाता है। • अकबर ने कारखानों या कार्यशालाओं की स्थापना कर, कलाकारों को अपनी स्वयं की शैली का विकास करने का अवसर दिया। • चित्रकला को अकबर, अध्ययन और मनोरंजन के साधन के रूप में देखता था। वह मानता था कि चित्र विषय का व्यवहार दर्शा सकता है और सजीव चित्र बनाने वाले चित्रकारों को वह निर्यात रूप से पुरस्कार दिया करता था। • मुगल चित्रकला में 'भारतीय प्रभाव' पुनः इसलिये देखने को मिलता है क्योंकि अकबर ने पूर्व के शासकों के लिए काम कर चुके भारतीय कलाकारों के सौंदर्य को भी मान्यता दी और अपने कारखानों में उन्हें काम करने के लिए आमंत्रित किया। • अकबर के काल की चित्रकला की स्पष्ट विशेषता 'त्रियामी आकृतियों' का प्रयोग और अग्रदृश्यांकन का निरंतर उपयोग था। • इस अवधि की एक विशिष्ट विशेषता 'लोकप्रिय कला' का 'दरबारी कला' में परिवर्तन था यानी कलाकार आम जनता के जीवन की अपेक्षा दरबारी जीवन का चित्रण करने पर अधिक केन्द्रित थे। • इस अवधि के प्रसिद्ध चित्रकार थे दसवंत, बसावन और केशु।
जहांगीर	• मुगल चित्रकला जहांगीर के शासनकाल में अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गयी। • वह स्वभाव से प्रकृतिवादी था और वनस्पतियों और जीवों, यानी पक्षियों, पशुओं वृक्षों और फूलों के चित्रों को प्राथमिकता देता था। • उसने छविचित्र में प्रकृतिवाद लाने पर बल दिया। • इस अवधि में विकसित होने वाली एक अनूठी प्रवृत्ति चित्रों के चारो ओर अलंकृत किनारों/बार्डर की थी। ये कभी-कभी उतने व्यापक होते थे, जितना कि स्वयं चित्र। • स्वयं जहांगीर को भी एक अच्छा कलाकार माना जाता है और उसकी अपनी स्वयं की निजी कार्यशाला थी। • उसकी चित्रशाला में अधिकांशतः लघु चित्रों की रचना की गई और इनमें से सबसे प्रसिद्ध जेबरा, शर्तुमुर्ग और मुर्गे के प्राकृतिक चित्र थे। • सबसे प्रसिद्ध चित्रकार उस्ताद मंसूर **नोट**—उस्ताद मंसूर जटिल से जटिल चेहरे की आकृतियां भी उतारने में विशेषज्ञ था।
शाहजहां	• मुगल चित्रकला की शैली शाहजहां के शासनकाल के दौरान तेजी से परिवर्तित हो गई। • शाहजहां चित्रों के कृत्रिम तत्वो की रचना करना पसंद करता था। कहा जाता है कि उसने चित्रों की सजीविता में कमी करने और अप्राकृतिक स्थिरता लाने का प्रयास किया क्योंकि वह अपने दरबार में यूरोपीय प्रभाव से प्रेरित था। • वह आरेखन के लिए लकड़ी के कोयले के उपयोग से दूर रहा और पेंसिल का उपयोग करके आरेखन और रेखाचित्र करने के लिए कलाकारों को प्रोत्साहित करता था। • उसने चित्रों में सोने और चांदी का उपयोग बढ़ाने का आदेश दिया क्योंकि वह चमकीले रंग अधिक पसंद करता था। • शाहजहां के शासनकाल के दौरान मुगल चित्रशाला का विस्तार हुआ लेकिन शैली और तकनीक में बहुत कुछ परिवर्तन भी आया।

भारतीय मूर्तिकला

काल	मूर्तियाँ	विशेषता
(A) हड़प्पा सभ्यता की मूर्तियाँ	(i) काँस्य मूर्तियाँ	• हड़प्पा सभ्यता व्यापक पैमाने पर कांसे की ढलाई की प्रथा की साक्षी थी। • कांसे की मूर्तियों को 'लुप्त मोम तकनीक' का उपयोग कर बनाया जाता था, जिसके अन्तर्गत मोम की मूर्ति बनाकर उस पर मिट्टी का लेप चढ़ाया जाता था और मिट्टी के सूखने के बाद उसे आग में तपाया जाता है, ताकि मोम मूर्ति में बने छेद से पिघल कर बाहर निकल जाये और उसी छेद से पिघली हुई धातु मोम की मूर्ति के ढांचे में ढल जाती थी और उसके ऊपर चढ़ा मिट्टी का लेप साफ कर दिया जाता था। इस तकनीक का देश के कई भागों में प्रचलन है। • काँस्य मूर्तियों का प्रमुख उदाहरण हैं-मोहनजोदड़ो की कांसे की नर्तकी और कालीबंगा से प्राप्त कांसे का बैल। *नोट*—नर्तकी की मूर्ति विश्व की सबसे पुरानी कांसे की मूर्ति है।
कालीबंगा से प्राप्त टेराकोटा मूर्तियाँ	(ii) टेराकोटा 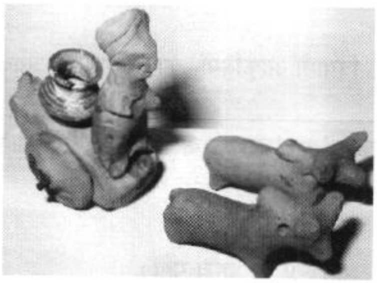	• टेराकोटा मूर्तियां बनाने के लिए पकी हुई मिट्टी के उपयोग को संदर्भित करता है। • टेराकोटा की मूर्तियां संख्या में कम और आकार रूप में भद्दी है। • टेराकोटा मूर्तियों का प्रमुख उदाहरण है मातृदेवी, सींग वाले देवता का मुखौटा आदि। *नोट*—टेराकोटा की मूर्तियां गुजरात और कालिबंगा के स्थलों से मिली हैं।
	(iii) अन्य	• दाढ़ी वाले पुजारी की अर्द्ध-प्रतिमा सिंधु घाटी की सभ्यता में मिली पाषाण मूर्तियों के सर्वोत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है। तिपतिया पैटर्न वाली शाल में लिपटे एक दाढ़ी वाले व्यक्ति की मूर्ति जिसकी आंखें लम्बी और आधी बन्द हैं, मानो वह ध्यान मुद्रा में हो। इस मूर्ति के दाहिने हाथ पर एक बाजूबंद और सिर पर सादी बुनी हुई पट्टिका है। • पुरूष धड़ की लाल बलुआ पत्थर की मूर्ति पाषाण मूर्ति कला का एक और नमूना है।
(B) मौर्य काल की मूर्तियाँ	(i) यक्ष और यक्षिणी की मूर्ति	• मौर्यकाल में मूर्तियों का मुख्य रूप से उपयोग स्तूप की सजावट, तोरण और मेघी में और धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था। • मौर्यकाल की दो प्रसिद्ध मूर्तियां यक्ष और यक्षिणी की है, ये मूर्तियां तीन धर्मों जैन, हिन्दू और बौद्ध में पूज्यनीय है। • यक्षिणी का सबसे पुराना उल्लेख तमिल रचना शिल्पादिकारण में मिलता है। सभी जैन तीर्थकर यक्षिणी से संबंधित थे।

(Continued)

काल	मूर्तियाँ	विशेषता
(C) मौर्योत्तर कला	(i) गांधार शैली 	• आधुनिक पेशावर और अफगानिस्तान के निकट पंजाब की पश्चिमी सीमाओं से संलग्न हिस्से में गंधार कला शैली का विकास हुआ। • यूनानी आक्रमणकारी अपने साथ ग्रीक और रोमन मूर्तिकारों की परम्पराएं लाए जिससे इस क्षेत्र की स्थानीय परंपराएं प्रभावित हुई। इस प्रकार गांधार शैली को कला की ग्रीको इंडियन शैली के रूप में भी जाना जाने लगा। • गांधार शैली का विकास 50 ईसा पूर्व से लेकर 500 ई. तक की अवधि में दो चरणों में हुआ। जहां आरम्भिक शैली को नीले घूसर बलुआ प्रस्तर के प्रयोग के लिए जाना जाता है, वहीं उत्तरवर्ती शैली में मूर्तियां बनाने के लिए मिट्टी और प्लास्टर का उपयोग किया जाता था। • बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियां ग्रीको रोमन देवताओं पर आधारित है, जो अपोलो की मूर्तियों से मिलती-जुलती है।
	(ii) मथुरा शैली 	• मथुरा शैली का विकास पहली और तीसरी शताब्दी ई.पू. के बीच की अवधि में यमुना नदी के किनारे हुआ। • मथुरा शैली की मूर्तियां उस समय के सभी तीनों धर्मो यथा हिन्दू, बौद्ध व जैन धर्म की कहानियों और चित्रों से प्रभावित है। ये मूर्तियां मौर्य काल के दौरान मिली पहले की यक्ष मूर्तियों के नमूने पर आधारित है। • मथुरा शैली ने मूर्तियों में प्रतीकों का प्रभावशाली उपयोग दिखाया। हिन्दू देवताओं जैसे शिव को लिंग और मुख लिंग के माध्यम से दिखाया, बुद्ध के सिर के चारो ओर प्रभामंडल गांधार शैली की तुलना में बड़ा और ज्यामितीय पैटर्न से अलंकृत है। • बुद्ध वज्रपाणि से घिरा हुआ दिखाया गया है।
	(iii) अमरावती शैली 	• भारत के दक्षिणी भाग में अमरावती शैली का विकास सातवाहन शासकों के संरक्षण में कृष्णा नदी के किनारे हुआ। • अमरावती शैली में गतिशील आकृतियों के प्रयोग पर अधिक बल दिया गया। • इस शैली की मूर्तियों में त्रिभंग आसन यानी 'तीन झुकावों के साथ शरीर' का अत्यधिक प्रयोग किया गया है।
(D) गुप्त काल		• गुप्त काल के दौरान सारनाथ के आस-पास मूर्ति कला की एक नई शैली विकसित हुई, जिसके क्रीम रंग के बलुआ पत्थर तथा धातु का प्रयोग था। • इस शैली की मूर्तियां विशुद्ध रूप से वस्त्र पहने हुए होती थी और इनमें किसी भी प्रकार की नग्नता नहीं थी। बुद्ध के सिर के चारों ओर निर्मित आभामंडल गहनतापूर्वक अलंकृत किया गया था। • गुप्त काल की मूर्तिकला का उदाहरण है सुल्तानगंज के बुद्ध (7.5 फुट ऊँचाई)

(Continued)

काल	मूर्तियाँ	विशेषता
(E) चोलकालीन मूर्ति	नटराज की मूर्ति 	• चोल, मंदिरों की सजावट में मूर्तियों पर विशेष महत्व दिया जाता था। • चोल मूर्ति कला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण नृत्य मुद्रा में नटराज की मूर्ति थी। • नटराज मूर्ति की विशेषताएं: ऊपरी दाहिने हाथ में डमरू है, जो ध्वनि का प्रतीक है। ऊपरी दाहिना हाथ अभय मुद्रा में उठा हुआ है, जो आशीर्वाद दर्शाता है और भक्तों के लिए अभयता का भाप आश्वस्त करता है। निचला बायाँ हाथ उठे हुए पैर की तरफ इशारा करता है और मोक्ष के मार्ग को दर्शाता है। शिव यह तांडव नृत्य एक छोटे बौने की आकृति के ऊपर कर रहे हैं। बौना अज्ञानता और एक अज्ञानी व्यक्ति के अहंकार का प्रतीक है। शिव की उलझी और हवा में बहती जटाएं गंगा नदी के प्रवाह की प्रतीक है। श्रृंगार में, शिव के एक कान में पुरूष की बाली है जबकि दूसरे में महिला की बाली है। यह पुरूष और महिला के विलय का प्रतीक है और इसे अक्सर अर्द्धनारीश्वर के रूप में जाना जाता है। शिव की बांह के चारो ओर एक सांप लिपटा हुआ है। सांप कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है, जो मानव रीढ़ की हड्डी में निष्क्रिय अवस्था में रहती है। अगर इस शक्ति को जगाया जाए तो मनुष्य सच्ची चेतना को प्राप्त कर सकता है। शिव की यह नटराज मुद्रा प्रकाश के एक प्रभामंडल से घिरी हुई है, जो समय के विशाल अंतहीन चक्र का प्रतीक है।

चित्रकला-क्षेत्रीय शैलियाँ

चित्रकला की क्षेत्रीय शैलियाँ	विशेषताएँ
राजस्थानी शैली	• राजस्थान की चित्रकला यहाँ के महलों, किलों, मंदिरों और हवेलियों में दिखायी देती है। • राजा सावंत सिंह के समय निहालचंद द्वारा बनाया गया बणी-ठणी का चित्र विश्व प्रसिद्ध है और भारत का मोनालिसा के नाम से जाना जाता है। • 16वीं शताब्दी तक यहां की चित्रकला गुजराती और मुगलकालीन चित्रकला से प्रभावित थी परन्तु बाद ने इसने अपना पृथक स्वरूप बना लिया जो 'राजपूत शैली' के नाम से प्रचलित हुआ। • **राजस्थानी चित्रकला के प्रमुख विषय**—पौराणिक एवं कृष्णलीला संबंधी चित्र, रागमाला एवं ऋतुओं के चित्र, राजसी वैभव व व्यक्ति चित्र और घरेलू जीवन के चित्र प्रमुख है। • **राजस्थानी चित्रकला का विकास**—मध्यकालीन पोथी चित्रण परम्परा तथा मुगल कला के प्रभाव से कलाप्रिय राजाओं के संरक्षण में राजस्थानी चित्रण शैली का विकास हुआ और गुजरात तथा मालवर की कला ने उसे और पल्लवित और पुष्पित किया।

<table>
<tr><th>चित्रकला की क्षेत्रीय शैलियाँ</th><th>विशेषताएँ</th></tr>
<tr><td>राजस्थानी शैली में चित्रित, लघु चित्रों की विभिन्न शैलियाँ—
1. मेवाड़ शैली
2. बूंदी शैली
3. बीकानेर शैली
4. किशनगढ़ शैली
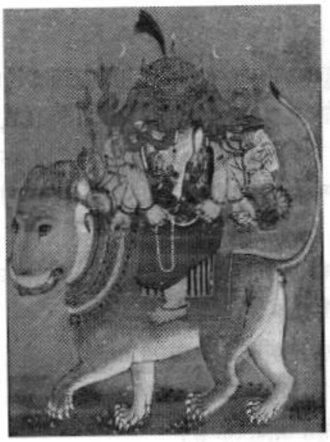</td><td>1. मेवाड़ शैली—
• राजस्थान की चित्रकला में मेवाड़ शैली का विशेष योगदान रहा है।
• प्रभाव—जैन शैली का प्रभाव पाया जाता है।
• प्रथम साक्ष्य—'श्रावक प्रतिक्रमण चूणी' नामक सचित्र ग्रंथ जो राजा तेजसिंह के समय 1260 में चित्रित किया गया था।
• विकास—मध्यकालीन जैन एवं पोथी चित्रों से माना जाता है।
• भव्यता—प्रसिद्ध चित्रकार साहबदीन द्वारा गीत गोविन्द, रागमाला और रसिक प्रिया के चित्रों में मेवाड़ शैली की भव्यता के दर्शन होते हैं।
विशेषता—
• चटक रंगों जैसे लाल, केसरिया, नीले तथा पीले रंगों का प्रयोग किया गया है।
• चित्र में प्रमुख व्यक्ति या महत्वपूर्ण घटना को मध्य भाग में रखकर संयोजित किया गया है।
• पुरूष आकृतियों की नाक लम्बी, चेहरा गोल व गर्दन के बीच का भाग अधिक भारी बनाया गया।
• स्त्रियों की आकृतियों में गम्भीरता तथा नेत्रों को दो वक्रों द्वारा मीनाकार ढंग से बनाया गया है।
• चित्रों में स्त्री कद में पुरूषों से छोटी बनायी गयी है।
• वृक्षों को स्पष्ट और झुण्डों में बनाया गया है, पर्वत तथा चट्टानों के चित्रों मे मुगल शैली का प्रभाव दिखायी देता है। जल की लहरों को दिखने के लिए लहरदार रेखाओं का प्रयोग किया गया है।
• पशुपक्षियों के चित्रण में भावुकता दिखायी देती है और उन्हें अलंकारिक ढंग से बनाया गया है।
• रात्रि दृश्य के चित्रण में गहरी प्रष्ठभूमि का प्रयोग किया गया है।
• चित्रों की प्रष्ठभूमि में भवनों का प्रयोग किया गया है, जिनके शिखर गुम्बदाकार बनाए गए हैं। भवन प्राय: सफेद रंग के बनाये गये हैं और उनके अन्दर अकबर कालीन मुगल शैली का प्रयोग किया गया है।
• मेवाड़ शैली के चित्रों में कृष्ण के चित्रों की प्रधानता दी गयी है।
• रागमाला के चित्रों में कृष्ण तथा राधा को आदर्श प्रेमी-प्रेमिका के रूप में चित्रित किया गया है।
• मेवाड़ शैली के चित्रों में ग्राम्य जीवन, जुलूस, दरबार, विवाह, संगीत, उत्सव, नृत्य, युद्ध, आखेट आदि के दृश्यों को प्रदर्शित किया गया है।</td></tr>
</table>

(Continued)

चित्रकला की क्षेत्रीय शैलियाँ	विशेषताएँ

2. बूंदी शैली—

- राजस्थान की चित्र परम्परा में बूंदी की चित्रकला विशेष उल्लेखनीय है।
- **संरक्षण**—चित्रकला को राज्याश्रय प्राप्त रहा-राव गोपीनाथ, छत्रासाल, विशन सिंह आदि राजाओं ने चित्रकला को विशेष संरक्षण दिया।
- **चित्रकला के प्रमुख विषय**—राग-रागिनियों, व्यक्तिचित्र, आखेट, पुरानी कथाओं के चित्र तथा विरहिणी राधा के विविभन्न रूप, चित्रकला के प्रमुख विषय हैं।
- **प्रभाव**—दक्षिणी शैली तथा मुगल शैली का प्रभाव होने पर भी यह शैली अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध है।
- **विशेषता—**
  - बूंदी शैली के चित्रों में सफेद, गुलाबी, लाल, सुनहरी तथा हिंगुल रंगों का अधिक प्रयोग मिलता है।
  - स्त्रियों की मुखाकृति में अधरों की छटा विचित्र प्रकार का सौन्दर्य उड़ेलती है, नेत्र अर्द्ध विकसित, तीखे और ऊपर एक रेखा के गोलार्द्ध में घनी कालिमा के साथ चित्रित रहते हैं। चित्रों में काले रंग के लहंगे, लाल चुनरी के साथ चित्रित रहते हैं। चित्रों में काले रंग के लहंगे, लाल चुनरी और कुंचकी प्राय: देखी जाती है।
  - पुरूषों की आकृति में नीचे की ओर झुकी हुई पगड़ियों, लम्बी घुटने तक या उसके भी नीचे तक जमे, कमर में दुपट्टा तथा पांवों में चुस्त पायजामा देखने को मिलता है।
  - बूंदी शैली में पशुपक्षी के चित्र जैसे तालाबों में क्रीड़ा करते हंस, मछलियों व बत्तखें तथा मोर, तोते, गिलहरी, हिरण, बंदर, सिंह आदि के चित्रण बहुत ही बरीकी से किये गये हैं।
  - वर्ष ऋतु में वर्षा के आनन्द तथा महलों में प्रेमभाव के चित्र बहुत आकर्षक है।

3. बीकानेर शैली—

- यहॉ के कलाप्रिय राजा अनूप सिंह के समय कला की जिस शैली का विकास हुआ उसे बीकानेर शैली के नाम से जाना जाता है।
- **संरक्षण**—राजा अनूप सिंह और राजा राम सिंह (अकबर के समय)।
- **चित्रों के प्रमुख विषय**—राजा, महाराजाओं के पोट्रेट्स, दरबार, आखेट के दृश्य, राज-रागिनियों के चित्र, भागवत कथा संबंधी चित्र तथा मुगल काल के चित्रों की प्रतिलिपियाँ इस शैली के चित्रों के प्रमुख विषय हैं।
- **विशेषता—**
  - पीला और गुलाबी रंग तथा किनारो पर पीला और लाल रंग इस शैली के चित्रों की सामान्य पहचान है।
  - चित्रों में पुरूष ऊँची शिखर आकार की पगड़ियां बांधे, फैले हुये जामे पहने तथा लम्बे और तीखे खड़ग हाथ में लिये हुए दिखाये गये हैं।
  - नारी चित्रों की आकृतियाँ जोधपुर और मुगल शैली के समान बनायी गयी है।
  - इन चित्रों में आकाश को सुनहरे छल्लों से घिरा हुआ मेघाच्छादित दिखाया गया है।
  - जूनागढ़ स्थित बादल महल में इस चित्रकारी का विशेष रूप दिखायी देता है।

(Continued)

चित्रकला की क्षेत्रीय शैलियाँ	विशेषताएँ
	4. किशनगढ़ शैली— • किशनगढ़ राज्य, जयपुर, जोधपुर, अजमेर व शाहपुरा से घिरा एक छोटी सी रियासत थी, जो राजस्थान शैली का एक महत्वपूर्ण अंग है। • **प्रभाव**—इस शैली पर बल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव पड़ा। • **जन्मदाता**—महाराजा सावन्त सिंह को किशनगढ़ शैली का जन्मदाता कहा जाता है। • **विकास**—निहालचंद, अमरचंद व छोटू नामक चित्रकारो ने किशनगढ़ चित्र शैली के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। • **विश्वविख्यात चित्र**—बणी-ठणी • **विशेषता**— • पीले, लाल, नीले रंग बड़ी खूबी के साथ हल्कापन लिये हुए। सफेद रंग का भी प्रयोग किया गया है। • स्त्रियों की चित्र में शरीर में कोमलता, लता के समान लचीलापन, पतली कमर, छरहरे व लम्बाई में शरीर, की रचना की गयी है उनके वस्त्रों को पारदर्शी बनाने में लहंगा, चोली, आंचल बहत ही सुन्दरढंग से दिखाये गये हैं। आभूषणों में गले का हार, माथे के आभूषण, हाथों में कंगन, कमर में लटकते मोतियों की करधनी आदि बड़ी बारीकी से दर्शायी गयी हैं। • परदों तथा फर्श पर कालीन की कारीगरी चित्रों में अद्वितीय अलंकरण के साख दिखायी गयी है। • राधाकृष्ण के रूप में परमात्मा एवं आत्मा का मिलन चित्रों में उभरकर आता है। • वृक्षों के झुरमुट में विभिन्न प्रकार के पक्षी दिखायी पड़ते हैं।
अन्य राजस्थानी शैलियाँ 1. आमेर-जयपूर शैली 2. मारवाड़ शैली 3. पहाड़ी शैली 4. कांग्ड़ा शैली 5. बशौल शैली 	**1. आमेर-रजयपुर शैली—** • आमेर शैली को ढूंडर शैली भी कहा जाता है। • इस शैली के प्रारम्भिक साक्ष्य राजस्थान कै बैराट के भित्ति चित्रों से मिलते हैं। • इस शैली के कुछ चित्र महल की दीवारों और राजस्थान में आमेर महल की समाधियों में देखा जा सकता है। • चित्र में कुछ पुरूष मुगल शैली के कपड़े और टोपी पहने दर्शाये गये हैं, परन्तु चित्रों का समग्र रूप लोक शैली का है। • 18वीं सदी में सवाई प्रताप सिंह के शासनकाल में यह शैली अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गयी। • भागवत पुराण, रामायण, रागमाल और कई छवि चित्रों का वर्णन करने के लिए लघु चित्र बनाए गये। **2. मारवाड़ शैली—** • यह चित्रकला की सबसे व्यापक शैलियों में से एक है। • 15वीं और 16वीं सदी में बने चित्रों में पुरुष और महिलाओं में रंगीन कपड़े पहने हुए है। इस अवधि में मुगल पैर्टन का अनुसरण किया गया परन्तु 18वीं सदी के बाद राजपूत तत्व प्रबल हो गए। • इस शैली में शिवपुराण, नटचरित्र, दुर्गाचरित्र, पंचतंत्र सहित चित्रकला की व्यापक श्रृंखला का श्रीगणेश किया।

(Continued)

चित्रकला की क्षेत्रीय शैलियाँ	विशेषताएँ
	3. पहाड़ी शैली— • चित्रकला की इस शैली का विकास मुगल आधिपत्य की छत्रछाया के अधीन आने वाले उप-हिमालयी राज्यों में हुआ। • पहाड़ी चित्रकला के अंतर्गत जम्मू से लेकर अल्मोड़ा तक फैली लगभग 22 रियासतों के दरबारों की चित्रशालाएँ शामिल थीं। • व्यापकता के कारण पहाड़ी चित्रकला को दो समूहों में बांटा जा सकता है— 1. जम्मू या डोगरा शैली (उत्तरी शृंखला) 2. कांगड़ा शैली (दक्षिणी शृंखला) • चित्रिक विषय पौराणिक कथाओं से लेकर साहित्य तक से संबंधित थे, जिसमें नई तकनीकों का प्रयोग किया गया। • इस शैली के महान चित्रकार थे नैनसुख एवं मनकू
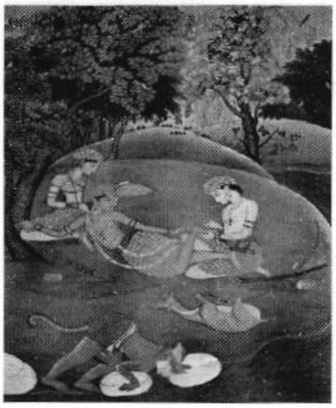	**4. कांगड़ा शैली—** • मुगल साम्राज्य के पतन के बाद मुगल शैली में प्रशिक्षित कई कलाकार कांगड़ा क्षेत्रा में चले गये, जिन्हें राजा गोवर्धन सिंह ने संरक्षण दिया। • इस चित्रकला की विशेषता संवेदनशीलता और बुद्धिमत्ता थी, जिनका अन्य शैलियों में अभाव था। • इस चित्रकला के सबसे लोकप्रिय विषय थे गीत-गोविन्द, भागवत पुराण, बिहारीलाल की सतसई और नल दमयंती थे। • चित्रों का दूसरा बहुत ही प्रसिद्ध समूह 'बारह महीने' अथवा 'बारह-मासा' का है, जिसमें कलाकार ने मनुष्य की भावनाओं को बारह महीनों के प्रभाव को आगे लाने का प्रयास किया है। • कागड़ा शैली कुल्लू, चंबा और मंडी के दरबार में विकसित होने वाली अन्य चित्रशालाओं की जनक शैली बन गयी।
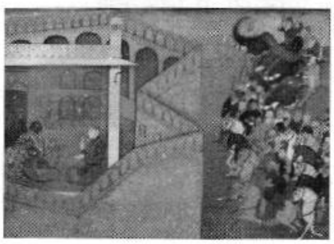	**5. बशौली शैली—** • 17वीं सदी में पहाड़ी शैली में बनाए गए चित्रों को बशौली शैली कहा जाता है। • इस शैली की विशेषता: कमल की पंखुड़ीयाँ, सदृश बड़ी आंखे तथा घटते चले जाने वाले बालों की रेखा के साथ-भाव अभिव्यक्ति करने वाला अर्थपूर्ण चेहरा था। • इस शैली के चित्रों में लाल, पीले और हरे रंग जैसे प्राथमिक रंगों का प्रयोग मिलता है। • इस शैली के पहले संरक्षक राजा कृपाल सिंह थे और उन्होंने भानुदत्त की रासमंजरी, गीत-गोविन्द और रामायण के चित्रों की चित्रण करने की आदेश दिया। • इस शैली के प्रसिद्ध चित्रकार थे देवीदास।

(Continued)

मर्ति/ मूर्ति कला	स्थान	अभिलक्षण/ तथ्य/ विशेषताएँ
गांधार शैली	तक्षशिला पुष्पकलावती नागरहार स्वातघाटी कापिशी बामियान बाहीक (बैक्ट्रिया)	इसका विकास ईसा की प्रथम और द्वितीय शताब्दी में गांधार और उसके आस पास के प्रदेश में हुआ। गांधार कला को इण्डोग्रीक कला भी कहते है क्योंकि इस कला की विषय वस्तु तो भारतीय है परन्तु शैली यूनानी हैं। बुद्ध की मूर्तियों की प्रधानता के अतिरिक्त इस शैली को बुद्ध की प्रथम मूर्ति बनाने का श्रेय प्राप्त है। लाहौर संग्रहालय में खड़ी बोधिसत्व की मूर्ति अद्भुत सुंदर है शहरे बहलील में मिली कुबेर और हारीत की संयुक्त मूर्ति दर्शनीय हैं सित्की की खड़ी हरीति दोनों कन्धों पर एक-एक बालक धारण किये मातृ गौरव की असामान्य प्रतिमा है। इस काल में निर्मित समस्त मूर्तियाँ और दृश्य पाषाण, महीन चिने हुए चूने के और पकायी हुई मिट्टी से बनाए गए हैं। मूर्ति या मिट्टी से निर्मित दृश्य या खिलौनों को स्वर्णिम रंग से रंग कर अधिक सुंदर बनाया जाता था। **मथुरा एवं गांधार शैली में अंतर** • गांधार शैली में अंग सौष्ठव की सूक्ष्मता और भौतिक सौंदर्य अंकन को महत्व प्रदान किया गया है जबकि मथुरा शैली में ऐसा नहीं है। • गांधार शैली में निर्मित बुद्ध की मूर्ति सुंदर केश विन्यास से अलंकृत, ग्रीक राजकुमार की भांति सूक्ष्म परिधान से सज्जित कुशलता से निरूपित है, जबकि मथुरा शैली में निर्मित बुद्ध की मूर्ति का सिर घुटा हुआ, भारतीय सन्यासी के भांति हैं • गांधार शैली में बुद्ध पदमासन पर आसीन है, जबकि मथुरा शैली में सिंहासन हैं। तथा बुद्ध की खड़ी मूर्ति के पैरों के नीचे सिंह की आकृति बनी हैं।
विष्णु	देवगढ़ (उ. प्र.)	अनन्त शवों पर सोते हुए परम सत्ता प्रतिनिधित्व करन वाले शेषशायी विष्णु का एक विशाल पैनल, विश्व की समाप्ति और इसके नए सृजन के बीच की अवधि में शस्वतता का उत्तम उदाहरण है इस मूर्ति में उनकी पत्नी लक्ष्मी उनका दाहिना पांव दबा रही है। दो परिचर आकृत्तियाँ लक्ष्मी के पीछे खड़ी हैं कई देव तथा दिव्य पुरूष ऊपर घूम रहे हैं उभरे पैनल में, मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस जोकि आक्रमण करने की मुद्रा में विष्णु के चार मूर्तिमान अस्त्रों को चुनौती दे रहे हैं।
विष्णु	मथुरा (5वी शताब्दी गुप्तकाल)	प्रतीकात्मक गाडन, वनमाला, मोतियों की डोरी जो ग्रीवा के चारों ओर घूमती है, धारण किए हुए मूर्ति है जो प्रारम्भिक गुप्त काल में उदाहरण है।

(Continued)

मर्ति/ मूर्ति कला	स्थान	अभिलक्षण/ तथ्य/ विशेषताएँ
गंगा यमुना की मूर्ति	(अहिच्छत्र)	अहिच्छत्र में शिव मंदिर के ऊपरी चबूतरे की ओर जाने वाली प्रमुख सीढ़ी के पार्श्व के आलों में मूल रस से स्थापित गंगा और यमुना, दो आदम कद पक्की मिट्टी की मूर्तियाँ का सम्बन्ध गुप्तकाल चौथी शताब्दी का है। गंगा अपने वाहन मकर और यमुना कच्छप पर खड़ी है। कालिदास ने इन नदियों का शिव से परिचन के रूप में उल्लेख किया है। तथा ऐसा गुप्त काल की परवर्ती मंदिर वास्तुकला की एक नियमित विशेषता के रूप में होता हैं। इसका सर्वाधिक उल्लेखनीय उदाहरण देवगढ़ के ब्राह्मणीय मंदिर के द्वार के बाजू हैं।
शिव पार्वती	(अहिच्छत्र)	शिव का सिर एक मनोधारी शीर्षस्थ गांठ से बंधो निष्प्रयभ लट के रूप में दर्शाया गया है। पार्वती का सिर तीसरी आँख के साथ है और माथे पर अर्द्धचन्द्र है उनकी लटों को खूबसूरती के साथ व्यवस्थित किया गया है। उनकी वेणी को एक माला से कसा गया है और पुष्प के उभार से सजाया गया है। उन्होंने एक गोल बाली पहनी है जिस पर स्वास्तिक का चिन्ह है।
मध्यकाल वृक्षिका या परी	गिरसपुर (ग्वालियर)	यहाँ एक दिव्य कन्या की एक सुन्दर आकृति जो एक वृक्ष के सहारे मनोहारी रूप से टिकी हुई है, वह आभूषणों से अंलकृत है और एक महीन बनावट वाले वस्त्रा से सुसज्जित है जो एक उचित रूप से सजाई गई सिल्क का आभास देता हैं। उसका केश विन्यास कलात्मक रूप से व्यवस्थित है। उसके होठों पर मंद मुस्कान सुंदर महिला के आकर्षण में वृद्धि करते हैं।
गुर्जर प्रविध अर्जुन के तप वाली मूर्ति	महाबलीपुरम	भारतीय कला के इतिहास में अर्जुन के तप वाले दृश्य में हाथी का निरूपण एक बेहतर उदाहरण है। गणेश रथ के द. प. के निकट अर्जुन के तप के पीछे एक गुफ़ा है जो वराहमण्डप के नाम से जानी जाती है अग्रभाग में स्थित सभा भवन में दो सिंह स्तम्भ और दो भित्ति स्तम्भ हैं। इसके आगे मध्य में एक कक्ष है जिसकी सुरक्षा में दो द्वारपाल तैनात हैं वराह के तुण्ड को अत्याधिक सावधानी से निर्मित किया गया हैं। वराह का दहिना और नागराज शेष के छत्र पर टिका हुआ है। कमल की पंखुड़िया और पुष्प तथा उनके लहराने का चित्रण इस प्रकार किया गया है कि यह जल का आभास देता है। इन सभी उदाहरणों में ओज की संरचना अद्वितीय है।
दुर्गा राक्षस से लड़ते हुए	महाबलीपुरम	इसमें महान देवी दुर्गा को भैंसे के सिर वाले राक्षस से एक भीषण युद्ध करते हुए दिखाया गया है। तथा इनकी अपनी-अपनी सेनाएं इनकी सहायता कर रही हैं। दुर्गा अपने शेर पर सवार होकर पूरे साहस के साथ शक्तिशाली राक्षस की ओर दौड़ रही हैं। राक्षस पीछे हट रहा है। फिर भी वह आक्रमण करने की प्रतिक्षा में है।
राष्ट्रकूट—शिव और पार्वती का विवाह	एलोरा	एलोरा में गुफा नं. 29 में शैल मूर्ति शिव और पार्वती के विवाह को दर्शाती है संकोची पार्वती का हाथ पकड़े हुए शिव कृत्य के मध्य में हैं। दाहिनी और ब्रह्मा पवित्रा अग्नि की लपटों को प्रज्जवलित करने में व्यस्त हैं पार्वती के माता पिता अपनी पुत्री महादेव को अर्पित करने के लिए पीछे की ओर खड़े हैं। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए बड़ी संख्या में एकत्र हुए देवों को मुख्य आकृति के ऊपर लहराते हुए दिखाया गया हैं।

(Continued)

मर्ति/ मूर्ति कला	स्थान	अभिलक्षण/ तथ्य/ विशेषताएँ
कैलाश पर्वत को रावण द्वारा हिलाना	एलोरा	इसमें रावण अपने 20 हाथों से कैलाश पर्वत पर अपना पूरा-पूरा जोर लगा रहा हैं। इस दृश्य में पर्वत के कम्पन्न को महसूस किया जा सकता है। पार्वती को अत्यधिक विचलित दिखाया गया है, वे शिव की ओर देख रही हैं, उन्होंने भयवश शिव का हाथ पकड़ा हुआ है, जबकि उनकी दासी पलायन कर रही है। लेकिन महादेव शांत हैं और वे अपने पैर से पर्वत को दाब कर कसकर पकड़े हुए हैं।
तीर्थ मंदिर की महेश मूर्ति	एलीफेंटा की गुफा	इसमें एक ही शरीर में उत्कीर्ण तीन सिर भगवान शिव के तीन विभिन्न पहलुओं का निरूपण करते हैं। शान्त और सम्मानित दिखने वाला मधयवर्ती चेहरा उन्हें सृष्टिकर्ता के रूप में दिखाता हैं। बाई ओर का कठोर दिखने वाला चेहरा उन्हें विनाशकर्ता के रूप में चित्रित करता हैं दाहिनी ओर का तीसरा चेहरा शांत और प्रसन्न अभिव्यक्ति को व्यक्त करता हैं।
शिव की गजासुर संहार मूर्ति (चोल)		क्रुद्ध महादेव उस हाथी राक्षस का जिसमें, ऋषियों और उनके भक्तों को बहुत प्रताणित किया, संहार के पश्चात भीषण हर्षोन्माद के एक ओजस्वी नृत्य में व्यस्त हैं प्रतिशोध के इस दिव्य कृत्य के एक मात्रा विस्मयाकुल दर्शक के रूप में देवी पार्वती निचले दाहिने कोने पर खड़ी हैं।

भारत के प्रमुख मेला/महोत्सव व आयोजन

ऐतिहासिक महोत्सव	स्थान	अभिलक्षण/ मनाए जाने का कारण/ विशिष्ट तथ्य
बिठोवा त्यौहार	महाराष्ट्र	भगवान विष्णु के प्रतिरूप भगवान बिठोवा की स्मृति में वर्ष में दो बार मनाते है।
पोंगल त्यौहार	तमिलनाडु , कर्नाटक, आंध्रप्रदेश	जनवरी माह में फसलों की समृद्धि के लिए मनाया जाता है। भोइ पोंगल, सूर्य पोंगल, मत्रु पोंगल
देव दिवाली		जैनियों द्वारा महावीर स्वामी के जन्मदिवस पर मनाया जाता हैं
वभूर्षण		श्वेताम्बर तथा दिगम्बर द्वारा अलग तिथि को मनाया जाता हैं।
ओणम	केरल	एक राक्षस के सम्मान में मनाया जाता है इस दिन नौका दौड़ का विशेष आयोजन होता है। अतापू (रंगोली) घरों में (महाबली) जाती है।
भोगली बिहू	असम	यह असम का एक महत्वपूर्ण पर्व है जो कि धान की कटाई के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
रोश हसना पासोवर		यहूदियों का नव वर्ष (सितम्बर/अक्टूबर) यह दिन विश्व बंधुत्व व विश्व न्याय का प्रतीक है।
पेन्टीकोस्ट		इजराइल के मिस्त्र के शिकंजे से मुक्त होने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। पासोवर के 50 दिन पश्चात मनाया जाता है इसे फस्ट फ्रूस्ट दिवस भी कहते है जो फसल कटाई के उपलक्ष्य में होता हैं
खोरदाद साल		'ज़ोरोस्टर' का जन्मदिवस, पूरी दुनिया में पारसी, विशेष रूप से भारत के पारसी इसे धूमधाम से मनाते हैं।
जरथुस्ट्र नीदोसो		पारसी धर्म के संस्थापक जरथुस्ट्र के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है।

(Continued)

ऐतिहासिक महोत्सव	स्थान	अभिलक्षण/ मनाए जाने का कारण/ विशिष्ट तथ्य
नौरोज		जरथ्रुस्ट की मृत्यु की वर्षगांठ
चपचार कुट त्यौहार	मिजोरम	पारसियों का नव वर्ष
मेला		
कुम्भ	नासिक (महाराष्ट्र)	
	उज्जैन (मध्य प्रदेश)	प्रत्येक 12 वर्ष पश्चात आयोजन होता है। (महाकुम्भ)
	प्रयाग (उत्तर प्रदेश)	प्रत्येक स्थान पर 3 वर्ष के अंतराल पर मनाया जाता है
	हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	2015–नासिक
पुष्कर	अजमेर (राजस्थान)	पुष्कर सरोवर में लोग कार्तिक पूर्णमासी को स्नान करने आते हैं। यहाँ ब्रह्मा जी का एक मात्र मंदिर है तथा यहाँ एक विशाल पशुमेला लगता है।
वैशाली	वैशाली (बिहार)	जैनियों का
ज्वालामुखी मेला	कांगडा घाटी (हिमाचल प्रदेश)	ज्वाला देवी के सम्मान में
बटेश्वर मेला	बटेश्वर (आगरा)	बटेश्वर में 101 मंदिर परिसर है।
ग्वालियर का मेला	मध्य प्रदेश	यमुना में स्नान किया जाता है तथा पशु मेला के लिए प्रसिद्ध
श्रावणी मेला	देवघर झारखण्ड	एक व्यापारिक मेला है।
चन्द्रभागा मेला	कोणार्क, उड़ीसा	फरवरी माह की पूर्णिमा में चन्द्रभागा नदी के किनारे आयोजित होता है।
सूरजकुण्ड	फरीदाबाद (हरियाणा)	
उत्सव		
भारत महोत्सव	विदेश	**उद्देश्य**—भारतीय संस्कृति को देश विदेश में फैलाना
		पहला—1982 इंग्लैण्ड
कोणार्क महोत्सव	उड़ीसा	राज्य के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।
खजुराहो उत्सव	खजुराहो (मध्य प्रदेश)	यह एक नृत्य उत्सव है जिसे मध्य प्रदेश कला परिषद आयोजित करती है।
मल्लापुरम नृत्य उत्सव	तमिलनाडु	
ताज महोत्सव	उत्तर प्रदेश	शास्त्रीय नृत्य की प्रदर्शनी
गुलाब उत्सव चण्डीगढ़	चण्डीगढ़	मुगल कालीन संस्कृति एंव भारतीय कलाओं के प्रसार के लिए
हाथी उत्सव	राजस्थान	चण्डीगढ़ की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए
उद्यान उत्सव	दिल्ली	जयपुर में हर वर्ष होली के दिन
सिंधु दर्शन	लेह (जम्मू-कश्मीर)	दिल्ली पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए
राजगृह नृत्य उत्सव	बिहार	
कपिल्य उत्सव	उत्तराखण्ड	मगध साम्राज्य की राजधानी में बौद्ध एंव जैन धर्म के अनुयाइयों के लिए
लोसांग उत्सव	सिक्किम	जैन धर्म और उसक संस्कृति के प्रचार के लिए
रथ यात्रा महोत्सव	पुरी (ओड़िशा)	भोटिया समुदाय द्वारा फसल की कटाई के अवसर पर मनाया जाता है।